॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

श्रीकृष्णोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

श्रीकृष्णके परिवारोंके रूपमें विभिन्न देवी-देवताओंका अवतरण, श्रीकृष्णके साथ उनकी एकरूपता

श्रीकृष्णावतारसे पूर्व जब देवताओंसे भगवान्‌ने उन्हें पृथ्वीपर अवतीर्ण होनेके लिये कहा, तब वे (जन्मभीरु) समस्त देवता उन सनातन भगवान्‌से बोले—'भगवन्! हम देवता होकर पृथ्वीपर जन्म लें, यह हमारे लिये बड़ी निन्दाकी बात है। हमारे द्वारा स्वेच्छासे तो भूतलपर जन्म ग्रहण करना सम्भव नहीं है; परंतु आपकी आज्ञा है, इसलिये हमें वहाँ जन्म लेना ही पड़ेगा। फिर भी इतनी प्रार्थना अवश्य है कि हमें गोप (गँवार मनुष्य) और स्त्रीके रूपमें वहाँ उत्पन्न न करें। जिसे आपके अङ्ग-स्पर्शसे वञ्चित रहना पड़ता हो ऐसा आपके सान्निध्यसे दूर रहनेवाला मनुष्य बनकर हममेंसे कोई भी शरीर धारण नहीं करेगा; हमें सदा अपने अङ्गोंके स्पर्शका अवसर दें, तभी हम अवतार ग्रहण करेंगे।' रुद्र आदि देवताओंका यह स्नेहपूर्ण वचन सुनकर स्वयं भगवान्‌ने कहा—'देवताओ! मैं तुम्हें अङ्ग-स्पर्शका अवसर दूँगा, तुम्हारे वचनोंको अवश्य पूर्ण करूँगा।'॥ १-२॥

भगवान्‌का यह आश्वासन पाकर वे सब देवता बड़े प्रसन्न हुए और बोले—'अब हम कृतार्थ हो गये।' फिर सब देवता भगवान्‌की सेवाके लिये प्रकट हुए। भगवान्‌का परमानन्दमय अंश ही नन्दरायजीके रूपमें प्रकट हुआ। नन्दरानी यशोदाके रूपमें साक्षात् मुक्तिदेवी अवतीर्ण हुईं। सुप्रसिद्ध माया सात्त्विकी, राजसी और तामसी—यों तीन प्रकारकी बतायी गयी है। भगवान्‌के भक्त श्रीरुद्रदेवमें सात्त्विकी माया है, ब्रह्माजीमें राजसी माया है और दैत्यवर्गमें तामसी मायाका प्रादुर्भाव हुआ है। इस प्रकार यह तीन प्रकारकी माया बतायी गयी। इससे भिन्न जो वैष्णवी माया है, जिसको जीतना किसीके लिये भी सम्भव नहीं है, जिसे पूर्वकालमें ब्रह्माजी भी पराजित न कर सके तथा देवता भी जिसकी स्तुति करते हैं, वह ब्रह्मविद्यामयी वैष्णवी माया ही देवकी-रूपमें प्रकट हुई। निगम (वेद) ही वसुदेव हैं, जो सदा मुझ नारायणके स्वरूपका स्तवन करते हैं। वेदोंका तात्पर्यभूत ब्रह्म ही श्रीबलराम और श्रीकृष्णके रूपमें इस महीतलपर अवतीर्ण हुआ। वह मूर्तिमान् वेदार्थ ही वृन्दावनमें गोप-गोपियोंके साथ क्रीडा करता है। ऋचाएँ उस श्रीकृष्णकी गौएँ और गोपियाँ हैं। ब्रह्मा लकुटीरूप धारण किये हुए हैं और रुद्र वंश अर्थात् वंशी बने हैं। देवराज इन्द्र सींगा बने हैं। गोकुल नामक वनके रूपमें साक्षात् वैकुण्ठ है। वहाँ द्रुमोंके रूपमें तपस्वी महात्मा हैं। लोभ-क्रोधादिने दैत्योंका रूप धारण किया है, जो कलियुगमें केवल भगवान्‌का नाम लेनेमात्रसे तिरस्कृत (नष्ट) हो जाते हैं॥ ३—९॥

गोपरूपमें साक्षात् भगवान् श्रीहरि ही लीला-विग्रह धारण किये हुए हैं। यह जगत् मायासे मोहित है, अतः उसके लिये भगवान्‌की लीलाका रहस्य समझना बहुत कठिन है। वह माया समस्त देवताओंके लिये भी दुर्जय है। जिनकी मायाके प्रभावसे ब्रह्माजी लकुटी बने हुए हैं

और जिन्होंने भगवान् शिवको बाँसुरी बना रखा है, उनकी मायाको साधारण जगत् कैसे जान सकता है? निश्चय ही देवताओंका बल ज्ञान है। परंतु भगवान्‌की मायाने उसे भी क्षणभरमें हर लिया। श्रीशेषनाग श्रीबलराम बने और सनातन ब्रह्म ही श्रीकृष्ण बने। सोलह हजार एक सौ आठ—रुक्मिणी आदि भगवान्‌की रानियाँ वेदकी ऋचाएँ तथा उपनिषद् हैं। इनके सिवा जो वेदोंकी ब्रह्मरूपा ऋचाएँ हैं, वे गोपियोंके रूपमें अवतीर्ण हुई हैं। द्वेष चाणूर मल्ल है, मत्सर दुर्जय मुष्टिक है, दर्प ही कुवलयापीड हाथी है। गर्व ही आकाशचारी बकासुर राक्षस है। रोहिणी माताके रूपमें दयाका अवतार हुआ है, पृथ्वी माता ही सत्यभामा बनी हैं। महाव्याधि ही अघासुर है और साक्षात् कलि राजा कंस बना है। श्रीकृष्णके मित्र सुदामा शम हैं, अक्रूर सत्य हैं और उद्धव दम हैं। जो शङ्ख है, वह स्वयं विष्णु है तथा लक्ष्मीका भाई होनेसे लक्ष्मीरूप भी है; वह क्षीरसमुद्रसे उत्पन्न हुआ है, मेघके समान उसका गम्भीर घोष है। दूध-दहीके भण्डारमें जो भगवान्‌ने मटके फोड़े और उनसे जो दूध-दहीका प्रवाह हुआ, उसके रूपमें उन्होंने साक्षात् क्षीरसागरको ही प्रकट किया है और उस महासागरमें वे बालक बने हुए पूर्ववत् क्रीड़ा कर रहे हैं। शत्रुओंके संहार तथा साधुजनोंकी रक्षामें वे सम्यक्‌रूपसे स्थित हैं। समस्त प्राणियोंपर अहैतुकी कृपा करनेके लिये तथा अपने आत्मजरूप धर्मकी रक्षा करनेके लिये श्रीकृष्ण प्रकट हुए हैं, यों जानना चाहिये। भगवान् शिवने श्रीहरिको अर्पित करनेके लिये जिस चक्रको प्रकट किया था, भगवान्‌के हाथमें सुशोभित वह चक्र ब्रह्मस्वरूप ही है॥ १०—१९॥

धर्मने चँवरका रूप ग्रहण किया है, वायुदेव ही वैजयन्ती मालाके रूपमें प्रकट हुए हैं, महेश्वरने अग्निके समान चमचमाते हुए खड्गका रूप धारण किया है। कश्यप मुनि नन्दजीके घरमें ऊखल बने हैं और माता अदिति रज्जुके रूपमें अवतरित हुई हैं। जैसे सब वर्णोंके ऊपर अनुस्वार शोभा पाता है, उसी प्रकार जो सबके ऊपर सुशोभित आकाश है, उसे ही भगवान्‌का छत्र जानो। व्यास-वाल्मीकि आदि ज्ञानी महात्मा—देवताओंके जितने स्वरूप बतलाते हैं तथा जिन-जिनको लोग देवरूप समझकर नमस्कार करते हैं, वे सभी देवता भगवान् श्रीकृष्णके ही आश्रित हैं। भगवान्‌के हाथकी गदा सारे शत्रुओंका नाश करनेवाली साक्षात् कालिका है। शार्ङ्गधनुषका रूप स्वयं वैष्णवी मायाने धारण किया है और प्राणसंहारक काल ही उनका बाण है। जगत्‌के बीजरूप कमलको भगवान्‌ने हाथमें लीलापूर्वक धारण किया है। गरुडने भाण्डीरवटका रूप ग्रहण किया है और नारद मुनि सुदामा नामके सखा बने हैं। भक्तिने वृन्दाका रूप धारण किया है। सब जीवोंको प्रकाश देनेवाली जो बुद्धि है, वही भगवान्‌की क्रिया-शक्ति है। अतः ये गोप-गोपी आदि सभी भगवान्‌से भिन्न नहीं हैं और विभु—परमात्मा श्रीकृष्ण भी इनसे भिन्न नहीं हैं। उन्होंने (श्रीकृष्णने) स्वर्गवासियोंको तथा सारे वैकुण्ठधामको भूतलपर उतार लिया है॥ २०—२५॥

जो इस प्रकार जानता है, वह सब तीर्थोंका फल पाता है और देहके बन्धनसे मुक्त हो जाता है—यह उपनिषद् है।

॥ अथर्ववेदीय श्रीकृष्णोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!